दैनिक जागरण
(10.07.2015)

मण्डीदीप अस्पताल में पैसा लेकर कराई जा रही डिलेवर

मंडीदीप संवाददाता। प्रदेश सरकार गर्भवती महिलाओं की सुरक्षित डिलेवरी कराने एवं जच्चा बच्चा के स्वास्थ्य के प्रति गंभीर है शासन इस पर करोड़ो रूपए व्यय कर रहा है लेकिन मंडीदीप सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में गर्भवती महिलाओं की डिलेवरी कराने के अलग अलग रेट है। लड़का पैदा होने पर एक हजार से दो हजार तथा लड़की होने पर पांच सौ से एक हजार रूपए तय है। इसमें कभी कभी जबरिया वसूली भी की जाती है।

यह शिकायत कई दिनों से प्राप्त हो रही थी हालांकि गुप्त रूप से इसकी तहकीकात चल रही थी। जिसमें उन्हे आज सफलता मिल गई। यह सनसनी खेज खुलासा उस समय हुआ जब मंडीदीप से बीस किलोमीटर दूर से अनूसूचित जाती की दलित महिला सपना बाई को जननी एक्सप्रेस का चालक सिमरौद ले जाने में दो घंटे से परेशान कर रहा था यह बात पत्रकारों को मालूम चली तो सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पहुंच गए वहां प्रसूता दो दिन की लड़की को लेकर अपनी सास के साथ बैठी थी पूछने पर उसने पैसा लेकर डिलेवरी कराने का आरोप लगाया।

रूपए नहीं तो बच्चा नहीं : समुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में वर्षो से चल रहे इस गोरखधंधे से पर्दा उस समय उठा जब सपना बाई सोमवार मंगलवार की रात ढाई बजे अपने परिजनों के साथ स्वास्थ्य केन्द्र पहुंची रात में ही लड़की पैदा हुई प्रसूता के परिजनों से एक हजार रूपए की मांग की गई पैसा नहीं होने पर बच्ची देने से मना कर दिया गया। जैसे तैसे पांच सौ रूपए देकर नर्स एवं दाई से लड़की को लिया गया। भाजपा के कार्यकाल में इससे पूर्व इतनी फजीहत गर्भवती महिलाओं एवं प्रसूताओं की कभी नही हुई यह बात महिलाओं द्वारा स समय पर शिकायत के माध्यम से उठाई परन्तु कोई फर्क नही पड़ा। राहुल नगर श्रीमती कमला पर्ते एवं सतलापुर में रहने व श्रीमती यशोदा बाई ने आरोप लगाया स्वास्थ्य केन्द्र में नर्से एवं दाईयां प्रसव के दी प्रसूताओ से ऐसे शब्दो का प्रयोग कर अपमा करती है उसका यहां उल्लेख नही किया सकता। वहीं कुछ महिलाओं के परिजन मांगने पर आसानी से देते है लेकिन गरीब मजदूर तबके के लोगों से जबरिया पैसा व किया जाता है रुपएं नही देने पर बच्चा दिया जाता। जच्चा का उपचार एवं नवजात टीका नहीं लगाने की धमकी तक दी जाती इस बारे में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के प्र चिकित्सक ने अनभिज्ञता जारी करते हुए क की पहले इस प्रकार की शिकायत मिली थी पर अंकुश लगा दिया गया था। कुल मिला मंडीदीप स्वास्थ्य केन्द्र एक बार फिर प्रकरण को लेकर चर्चा में आ गया अब दे होगा की स्वास्थ्य महकमा इस बारे मे कार्यवाही करता है।

मेरे परिवार वालों से प्रसूत के बाद पांच सौ रूपए डिलेवारी कराने वाली कर्मचारियों द्वारा लिए गए है।

श्रीमती सपना बाई सिमरौद

कोई पीड़ित शिकायत करे तो हम पैसा लेने वाले स्वास्थ्य कर्मी के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कराएंगे।

डॉ एलआर दिवाकर, प्रभा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मंडीदी

मंडीदीप से इस प्रकार की शिकाय मिल रही है हम जांच कराकर दोषी पाए ज वालों के खिलाफ सख्त कार्यवाही करेंगे

डा. शशी ठाकुर, जिला स्वास्थ अधिकारी रायर

नवभारत
(10-07-2015)

विक्षिप्त नाबालिग को बांधकर ले गए थाने

पेटलावद 9 जुलाई नससे. नगर में अर्धविक्षिप्त नाबालिक किशोर को बांधकर थाने ले जाने का मामला बुधवार देर शाम पुलिस थाने में सामने आया। बताया जा रहा है कि गणपति चौक निवासी को मोहल्ले के कुछ लोगो ने विवाद करने और बोतल से प्रहार करते हुए रोका, वह नही रूकने पर उसे रस्सी से बांधकर नगर भ्रमण कराते हुए थाने ले जाकर पुलिस के सुपूर्द किया। परिजनो ने किशोर को अर्धविक्षिप्त बताते हुए कहा वह कोई भी निर्णय लेने में सक्षम नही है। उसका दिमागी संतुलन ठीक नही होने से कई बार अप्रत्याशित समस्या का सामना करना पड़ता है। टीआई शिवजीसिंह राठौर का कहना है कुछ लोग विक्षिप्त किशोर को थाने पर छोड़ गए है। परिजनो को समझाइश देकर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

नवभुनिया
(10-02-2015)

दबंगों ने नदी किनारे अंतिम संस्कार से रोका

घोड़ाडोंगरी में फिर दो गुट सामने, मजबूरी में घर के पीछे दफनाया

घोड़ाडोंगरी (ब्यूरो)। जिले के घोड़ाडोंगरी ब्लाक में शांतिपुर गांव की एक वृद्धा का अंतिम संस्कार करने के लिये दो गज सरकारी जमीन भी परिजनों को नसीब नहीं हो पाई। गांव के जिस शमशान घाट पर पिछले 40 साल से अंतिम संस्कार हो रहे हैं वहां जब परिजन अर्थी लेकर पहुंचे तो लाठी लेकर पहुंचे दबंगों ने भगा दिया। दोनों गुटों के विवाद को प्रशासन 23 घंटे बाद भी सुलझा नहीं पाया तो परिजनों को मजबूरी में 23 घंटे बाद अपने घर के पीछे ही अंतिम संस्कार करना पड़ा।

घोड़ाडोंगरी के पुनर्वास क्षेत्र चोपना क्षेत्र में शांतिपुर गांव पिछले कुछ महीनों से दो गुटों के बीच टकराव के कारण सुर्खियों में आ गया है। यहां एक गुट के लोग नदी के किनारे स्थित सरकारी जमीन पर 40 वर्ष से हो रहे अंतिम संस्कार पर आपत्ति जता रहे हैं। जब उनकी आपत्ति नहीं मानते तो दबंगाई के सहारे इसे रोकने का प्रयास हो रहा है।